shrIkRiShNa aShTaka

श्रीकृष्णाष्टक ब्रह्मानन्द्विरचितम्

Document Information

Text title: kRiShNa aShTaka

File name : brahmaanandakrishna8.itx

Category: aShTaka, vishhnu, krishna, brahmAnanda, vishnu

Location : doc_vishhnu
Author : Brahmananda

Proofread by : Ravin Bhalekar ravibhalekar at hotmail.com

Latest update: January 16, 2005

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

September 16, 2023

sanskritdocuments.org



shrIkRiShNa aShTaka

श्रीकृष्णाष्टक ब्रह्मानन्द्विरचितम्



श्री गणेशाय नमः । (प्रमाणिका छन्दः) चतुर्मुखादिसंस्तुतं समस्तसात्वतानुतम् । हलायुधादिसंयुतं नमामि राधिकाधिपम् ॥ १॥ बकादिदैत्यकालकं सगोपगोपिपालकम् । मनोहरासितालकं नमामि राधिकाधिपम् ॥ २॥ सुरेन्द्रगर्वगञ्जनं विरिच्चमोहभञ्जनम् । व्रजाङ्गनानुरञ्जनं नमामि राधिकाधिपम् ॥ ३॥ मयूरपिच्छमण्डनं गजेन्द्रदन्तखण्डनम् । नृशंसकंसदण्डनं नमामि राधिकाधिपम् ॥ ४॥ प्रदत्तविप्रदारकं सुदामधामकारकम् । सुरद्रमापहारकं नमामि राधिकाधिपम् ॥ ५॥ धनञ्जयाजयावहं महाचमूक्षयावहम् । पितामहव्यथापहं नमामि राधिकाधिपम् ॥ ६॥ मुनीन्द्रशापकारणं यदुप्रजापहारणम् । धराभरावतारणं नमामि राधिकाधिपम् ॥ ७॥ सुवक्षमुलशायिनं मृगारिमोक्षदायिनम् । स्वकीयधाममायिनं नमामि राधिकाधिपम् ॥ ८॥ इदं समाहितो हितं वराष्टकं सदा मुदा । जपञ्जनो जनुर्जरादितो द्वृतं प्रमुच्यते ॥ ९॥ ॥ इति श्रीपरमहंसब्रह्मानन्दविरचितं श्रीकृष्णाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

Proofread by Ravin Bhalekar ravibhalekar at hotmail.com

श्रीकृष्णाष्टक ब्रह्मानन्द्विरचितम्

→∘**○**

shrIkRiShNa aShTaka

pdf was typeset on September 16, 2023

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

TO CONT